अमर उजाला
प्रवाह
नई दिल्ली | मंगलवार, 23 अप्रैल 2019
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

आतंकवाद शांति और सुरक्षा, समृद्धि और लोगों के लिए एक बड़ा खतरा है...
- बान की मून

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव

राफेल सौदे से जुड़े अवमानना के मामले में अपने बयान पर राहुल गांधी ने खेद जताया है, क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प था ही नहीं। सोशल मीडिया के इस दौर में तथ्यों को बिना परखे गलतबयानी करने से हमारी संस्थाओं की साख पर ही आंच आती है।

प्रचार की सीमाएं

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने राफेल सौदे से जुड़े अदालत की अवमानना संबंधी मामले में अपने विवादित बयान पर खेद जताया है, क्योंकि उनके पास इसके अलावा कोई और विकल्प था ही नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने राफेल मामले में लीक दस्तावेजों को सुनवाई के लिए मंजूरी देते समय उन शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया था, जिन्हें राहुल ने सर्वोच्च अदालत के हवाले से कहा था। 10 अप्रैल को सर्वोच्च अदालत द्वारा राफेल पर पुनर्विचार याचिका मंजूर करने के तुरंत बाद राहुल ने कहा था, कि 'सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि चौकीदार ही चोर है।' इस पर भाजपा नेता और सांसद मीनाक्षी लेखी ने उनके खिलाफ अदालत की अवमानना की याचिका दायर की थी, जिस पर आज सुनवाई होनी है। जाहिर है, राहुल के खेद जताए जाने के बावजूद उन पर अवमानना का मामला चलेगा या नहीं, यह अदालत को तय करना है। राहुल ने खेद जताते हुए कहा है कि उन्होंने यह बयान राजनीतिक आवेश में दिया था, और उन्हें उस समय अदालत के पूरे फैसले की जानकारी तक नहीं थी। यह दुखद है कि विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी के नेता ने भी बिना तथ्यों को परखे हुए ऐसा बयान दे दिया, जिससे सर्वोच्च अदालत की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। दूसरी ओर सर्वोच्च अदालत के 14 दिसंबर, 2018 के फैसले को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह सहित कई केंद्रीय मंत्रियों ने राफेल सौदे में 'क्लीन चिट'करार दिया था! संदर्भों और तथ्यों को अपनी सुविधा से प्रस्तुत करने की इस प्रवृत्ति से हमारी संस्थाओं की साख पर आंच आती है। ऐसे दौर में जब सोशल मीडिया के जरिये किसी भी खबर, सूचना या बयान को देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचने में देर नहीं लगती, उसमें अपुष्ट या गलत बयानबाजी के खतरों को सहज समझा जा सकता है। चुनाव आयोग ने आदर्श आचार संहिता के जरिये प्रचार की सीमाएं तय कर रखी हैं, लेकिन स्थिति यह है कि मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय पार्टियों के नेता तक इसका उल्लंघन करने से गुरेज नहीं करते। चुनावी प्रचार के दौरान तीखे आरोप-प्रत्यारोप होते रहते हैं, लेकिन इसमें तथ्यों को जिस तरह से तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जा रहा है, वह हमारे राजनीतिक विमर्श में आई गिरावट को ही दर्शाता है।

श्रीलंका पर आतंकी आंच

ईस्टर रविवार को श्रीलंका में हुए आतंकवादी हमले ने भारत के लोगों को 26/11 को हुए मुंबई हमले की याद दिला दी, जब लश्कर-ए तैयबा के आतंकवादियों ने शहर के होटलों और यहूदी ठिकानों पर तीन सुनियोजित हमले किए थे। उनमें 165 लोग मारे गए थे और 300 लोग घायल हुए थे। आप श्रीलंका में हुए आतंकी हमले की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि वहां लगभग 300 लोग मारे गए और 500 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। श्रीलंका से आ रही खबरें बताती हैं कि आत्मघाती हमलावरों द्वारा नेगंबो, कोलंबो और बट्टीकलोआ स्थित तीन चर्चों पर एक ही समय सुबह 8.45 बजे बम विस्फोट किए गए थे। इसके अलावा तीन प्रमुख होटलों पर भी हमले किए गए।

वहां की सरकार ने पूरे द्वीप में कर्फ्यू लगा दिया है और पूरा देश इस अंदेशे में हाई अलर्ट पर है कि आने वाले दिनों में और भी हमले हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में संभावित हमलों के बारे में अफवाहें फैलाई जा रही हैं। लेकिन पुलिस ने उन्हें गलत बताया है। हालांकि बंदरनाइक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नजदीक एक आईईडी पाया गया था, जिसे निष्प्रभावी कर दिया गया। राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना, जो सिंगापुर और भारत के निजी दौरे पर थे, तुरंत देश लौट गए हैं और उन्होंने इस घटना की जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी नियुक्त कर दी है।

शुरुआती अटकलों के बाद श्रीलंका के एक मंत्री राजिता सेनरत्ने ने पुष्टि की कि नेशनल तौहीद जमात (एनटीजे) इसमें शामिल थी और जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया है, वे सभी स्थानीय लोग हैं। हालांकि उन्होंने कहा कि अधिकारियों को यह नहीं पता कि वे बाहरी लोगों से जुड़े थे या नहीं। पुलिस ने गिरफ्तार लोगों की पहचान और संबद्धता का अभी खुलासा नहीं किया है।

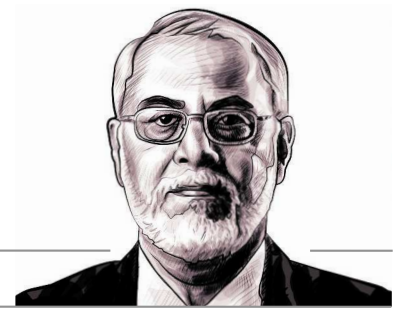

इस्लामी कट्टरपंथियों की दक्षिण पूर्वी एशिया में लंबे समय से मौजूदगी रही है और इस क्षेत्र के सैकड़ों लड़ाके इस्लामिक स्टेट में शामिल हुए थे।

मनोज जोशी

सेनरत्ने ने इन हमलों को भारी खुफिया विफलता बताया है, क्योंकि विदेशी खुफिया एजेंसी से इस संबंध में चार अप्रैल को ही सूचना मिल गई थी, लेकिन पुलिस के अधिकारियों को इसके बारे में नौ अप्रैल को बताया गया और संदिग्ध लोगों के नाम तक उपलब्ध कराए गए। 11 अप्रैल को डीआईजी प्रियालाल दासनायके ने कोलंबो में होटलों पर बमबारी, चर्चों और भारतीय उच्चायोग के कार्यालय पर हमले के संबंध में चेतावनी जारी की थी। उन्होंने बताया था कि इन हमलों का संचालन एनटीजे के प्रमुख मोहम्मद जहरान करेंगे। हो सकता है कि इस चेतावनी से पूरे द्वीप में वीआईपी सुरक्षा मजबूत की गई हो, लेकिन पवित्र ईस्टर के त्योहार में चर्चों और होटलों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए कुछ नहीं किया गया।

वास्तव में समस्या श्रीलंका की विभाजित सरकार के कारण है, क्योंकि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री, दोनों में तालमेल नहीं है। प्रेस कांफ्रेंस में सेनरत्ने ने बताया कि दासनायके की चेतावनी के बारे में प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे को नहीं बताया गया, जिन्हें सुरक्षा परिषद की बैठकों से भी बाहर रखा गया था। भले ही पुलिस का कहना है कि सभी स्थानीय लोग इसमें शामिल थे, लेकिन हमलों की भीषणता को देखते हुए इसकी काफी आशंका है कि इसके पीछे खूंखार आतंकी तत्वों, संभवतः इस्लामिक स्टेट का हाथ रहा हो। श्रीलंका की कुल आबादी में 70.2 प्रतिशत बौद्ध, 12.6 फीसदी हिंदू, करीब 9.7 फीसदी मुस्लिम और 7.4 फीसदी ईसाई हैं। श्रीलंका ने हिंदू और बौद्ध, दोनों तरह के कट्टरपंथ को देखा है, लेकिन मुस्लिम शांतिपूर्ण रहे हैं। हालांकि उनमें भी कुछ कट्टरवादी तत्व रहे हैं। वर्ष 2016 में श्रीलंका की संसद में बताया गया था कि देश के अच्छे पढ़े-लिखे परिवारों के करीब 32 मुस्लिम इस्लामिक स्टेट में शामिल हो गए हैं।

एनटीजे एक अज्ञात संगठन है, जिसके आतंकवाद का कोई लंबा इतिहास नहीं है। पिछले वर्ष यह एक बौद्ध प्रतिमा को तोड़ने में संलिप्त रहा था और इसके सचिव अब्दुल रजिक को नस्लवादी भावनाएं भड़काने के लिए गिरफ्तार किया गया था। हालांकि एनटीजे बहुत से वैश्विक इस्लामी आंदोलनों का हिस्सा रही है, जो पूरे विश्व में अपनी तरह के इस्लाम का प्रसार करना चाहते हैं। इस बात की ज्यादा आशंका है कि एनटीजे में इस्लामिक स्टेट जैसे कुछ ज्यादा कट्टरपंथी तत्वों ने घुसपैठ की हो, जिनमें एनटीजे की आड़ में इन हमलों को अंजाम देने की क्षमता थी।

संयोग से एक तमिलनाडु तौहीद जमात भी है, यह भी एक इस्लामी संगठन है, लेकिन इसकी गतिविधियां सामाजिक क्षेत्रों में हैं, जो सामुदायिक रसोई चलाने और रक्तदान शिविर आयोजित करने का काम करता है। हालांकि हमेशा यह चिंता रहती है कि कभी-कभी ये संगठन वैचारिक आधार रखते हैं और उनके कुछ अपराध हिंसक होते हैं।

भारत श्रीलंका की घटनाओं को बहुत ध्यान से देख रहा होगा। पिछले कुछ समय से, नई दिल्ली में कट्टरपंथी इस्लामी समूहों को लेकर चिंता है, जो दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में फैलते जा रहे हैं। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने कहा है कि भारत या उसके पड़ोस में इस्लामिक स्टेट का प्रभाव उतना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे देशों में इस्लामिक स्टेट की शाखाएं हैं। विशेष रूप से सीरिया में इस्लामिक स्टेट के खत्म होने के बाद सीरिया से लौटे कट्टरपंथियों को लेकर चिंता है। हालांकि भारत ने इस पर बहुत ज्यादा चिंता नहीं जताई है, लेकिन मालदीव जैसे देश सीरिया से लौटने वाले कट्टरपंथियों के कारण असुरक्षित हो सकते हैं। इसी तरह दक्षिण पूर्व एशिया में इस्लाम का पुनरुत्थान हुआ है, जहां 27 करोड़ मुसलमान रहते हैं। इस्लामी कट्टरपंथियों की दक्षिण पूर्वी एशिया में लंबे समय से मौजूदगी रही है और इस क्षेत्र के सैकड़ों लड़ाके इस्लामिक स्टेट में शामिल हुए थे। मई, 2017 में फिलीपींस की सरकार ने मारवी शहर को इस्लामी तत्वों के कब्जे से बचाने के लिए पांच महीने तक सैन्य अभियान चलाया था। तब से इंडोनेशिया में कई चर्चों पर बम धमाके हुए हैं और इस क्षेत्र के देशों ने उनकी गतिविधियों को रोकने के लिए आपसी सहयोग बढ़ाया है।

लेखक ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के प्रतिष्ठित फेलो हैं।

अंतर्ध्वनि

>> आगा शाहिद अली

प्रकृति के करीब होना मेरे लिए कोई मुद्दा नहीं रहा

मैंने पहली कविता नौ वर्ष की उम्र में लिखी और वह अंग्रेजी में थी। मैंने उसे अपनी मां को दिखाया, तो उन्होंने काफी उत्साह बढ़ाया। बारह वर्ष की उम्र में मैंने ईशा पर एक कविता लिखी। उसे मैंने अपने पिता को दिखाया, तो उन्होंने मुझे चमड़े की जिल्द वाली एक नोटबुक खरीदकर दी और कहा कि मैं अपनी सभी कविताएं उसी में लिखूं। उससे मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला। दरअसल मेरे घर में फारसी, उर्दू, अंग्रेजी और कश्मीरी में अक्सर कविताएं सुनी जाती थीं। जब मैं अकेला होता हूं, तो लगता है कि मेरा कहीं कोई घर नहीं है। लेकिन जिस क्षण मैं लोगों के साथ होता हूं, मुझे घर का एहसास होता है, क्योंकि लोगों को मैं बहुत प्यार करता हूं। मुझे लोगों के साथ रहना, उनका मनोरंजन करना पसंद है। मुझे प्रकृति के बजाय किताबों की दुकानों, रेस्तराओं में जाने और लोगों से मिलने में अच्छा लगता है। निश्चित रूप से मैं प्रकृति के करीब नहीं होना चाहता। इसकी वजह शायद यह है कि मेरा बचपन कश्मीर में गुजरा है, जो आश्चर्यजनक रूप से बहुत ही खूबसूरत है। मैं कश्मीर से बहुत प्यार करता हूं। कश्मीर इतना सुंदर है कि मेरे लिए प्रकृति के करीब जाना कोई मुद्दा ही नहीं रहा। प्रकृति हमेशा मेरे करीब रही। वह इतना मेरे जीवन का हिस्सा रही है कि उसकी महत्ता मेरे लिए खत्म हो गई। जब मैं कश्मीर के बारे में सोचता हूं, तो प्रकृति के बारे में नहीं, वहां के अपने दोस्तों के बारे में सोचता हूं। मैं उन जगहों के बारे में सोचता हूं, जहां मैं घूमता था, मैं पहाड़ों के बारे में सोचता हूं। मैं कल्पना करता हूं कि वहां मैं कहीं पर बैठकर सूर्यास्त देख रहा हूं। मैं उन परिदृश्यों के करीब हूं, जो मेरी भावनाओं का हिस्सा रहे हैं और निश्चित रूप से, उनमें से कुछ मेरी कविता में आते हैं। अगर आप मेरी कविता ध्यान से पढ़ेंगे, तो उनमें आपको संगीत और संवेदनशीलता मिलेगी।

दिवंगत भारतीय-अमेरिकी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> श्रीमन नारायणन

युवा पीढ़ी को पेड़-पौधों और चिड़ियों से जोड़ा

जब भी मैं अपनी आंखें बंद करता हूं, मेरे सामने बचपन के वे दिन सामने आ जाते हैं, जब सुबह पक्षियों के कलरव से मेरी आंखें खुलती थीं। और नाश्ते के समय मां के साथ मैं गोरैयों और दूसरे पक्षियों को रोटी के टुकड़े और फल खिलाता था। मैं गांव के बजाय शहर में पला-बढ़ा। इसके बावजूद पेड़-पौधे और पक्षियों से बचपन से ही मेरा जिस तरह जुड़ाव रहा, उसके लिए मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं, क्योंकि आज प्रकृति के वे दृश्य शहरों और कस्बों में तो नहीं दिखते। अजीब संयोग है कि शहरों में अपना पूरा जीवन बिता चुकने के बाद बुढ़ापे में मैं गांव में रहने लगा हूं। मैं केरल में एर्नाकुलम जिले के मुपथ्थाडम गांव में रहता हूं। यह वही गांव है, जिसे छोड़कर मेरे पिता शहर चले गए थे।

मैं जब इस गांव में आया था, तो यहां वैसी हरियाली नहीं दिखी, जैसी केरल के गांवों में अमूमन दिखती है। यहां तक कि गांव में पानी के सोते भी कम हैं। जो बात मुझे खटकी, वह यह कि हरियाली और पानी के अभाव में पक्षियां मेरे गांव में आते ही नहीं थे। बचपन में परिवार के साथ जब गांव आता था, तो एक-दो तालाबों के अलावा थोड़ी दूर पर एक छोटी-सी नदी भी थी। आज पानी के वे सारे स्रोत सूख चुके हैं। गांव में बसने के साथ ही मैंने कुछ अनूठा करने के बारे में सोचा। मैंने दस हजार पौधे खरीदकर पूरे गांव में बंटवा दिए। मैंने गांव के युवाओं को मेरे अभियान से जोड़ लिया है। उनके साथ पूरे गांव में घूम-घूमकर मैंने पौधे लगवाए और इसकी भी व्यवस्था की कि उन पौधों को लगातार पानी मिलता रहे। मेरे तीन बेटे हैं, जो नौकरी करते हैं और शहर में रहते हैं। नौकरी से रिटायर होने के बाद मेरा अपना रेस्टोरेंट और लॉटरी का व्यवसाय है, जिससे पर्याप्त आमदनी हो जाती है। चूंकि बेटों की जिम्मेदारी मैंने पूरी कर दी है, इसलिए अपने अभियान में मुझे पैसे की कमी नहीं होती। उल्टे जिन युवाओं को मैंने अपने साथ जोड़ा है, उनमें से कुछ की मैं आर्थिक सहायता करता रहता हूं। चूंकि प्राकृतिक जलस्रोतों को पुनर्जीवित करना बड़ा काम है, इसलिए गर्मियों में पक्षियों को पानी पिलाने के लिए मैंने काम शुरू किया। इसके तहत मैंने कुल दस हजार से भी अधिक मिट्टी के बर्तन खरीदे। फिर अपने गांव में अलग-अलग उन बर्तनों को रखने के अलावा मैंने शहरों की सोसाइटियों में भी वे बर्तन बांटे। मैंने यह अभियान पूरे जिले में फैलाया, जिसमें मेरे कई लाख रुपये खर्च हुए। गांवों में रखे गए कुछ बर्तन तो इतने बड़े हैं कि उनमें सौ चिड़ियां एक साथ पानी पी सकती हैं। जिले के सभी गांवों में मैंने युवाओं को वॉलंटियर्स तैनात किया है, जो नियमित रूप से पौधों और पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करते हैं। चूंकि यह पर्यावरण से जुड़ा काम है, इसलिए सभी जगहों में मेरे इस अभियान को भरपूर समर्थन मिला है। अनेक महिलाएं और बुजुर्ग खुशी-खुशी यह काम एक मिशन के तहत करते हैं। हाल ही में मैंने पूरे जिले में पचास हजार पौधे बांटें हैं।

सघन पौधरोपण के कारण हरियाली भी खूब दिखने लगी है। हाल में मैंने 50 हजार पौधे बांटे हैं।

मेरे गांव में अब सुबह से ही पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ता है। सघन पौधरोपण के कारण हरियाली भी खूब दिखने लगी है। जल्दी ही मैं गांव के दो पुराने तालाबों के जीर्णोद्धार का काम शुरू करने वाला हूं, जिसमें स्थानीय लोगों के साथ-साथ जिला प्रशासन ने भी सहयोग करने का आश्वासन दिया है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

नौकरशाही का बदलता चेहरा

विभिन्न क्षेत्रों के नौ विशेषज्ञों को लैटरल एंट्री के जरिये केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में संयुक्त सचिव के पदों पर सीधी नियुक्ति दी गई है। इनका कार्यकाल तीन साल का होगा और अच्छा प्रदर्शन होने पर इसे पांच साल तक किया जा सकेगा।

जयंतीलाल भंडारी

हाल ही में देश में पहली बार संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा चयनित नौ विभिन्न असाधारण योग्यता वाले अनुभवी पेशेवर विशेषज्ञों को केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में संयुक्त सचिव के पदों पर सीधी नियुक्ति दी गई है। पेशेवर योग्यताओं के चलते नियुक्ति पाने वाले संयुक्त सचिवों को नागर विमानन, कृषि, वित्त, नौवहन के साथ नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन जैसे मंत्रालयों की जिम्मेदारी दी गई है। इसे 'लैटरल एंट्री' कहा जाता है। अभी इन पदों पर सिविल सर्विसेस से आईएएस बने अधिकारी करीब 25 साल की सेवा के बाद पहुंच पाते हैं। संयुक्त सचिव के पद पर नियुक्ति का कार्यकाल तीन साल का होगा और अच्छा प्रदर्शन होने पर इसे पांच साल तक किया जा सकेगा।

नौकरशाही में 'लैटरल एंट्री' का पहला प्रस्ताव 2005 में आया था। प्रशासनिक सुधार पर पहली रिपोर्ट में इसकी अनुशंसा की गई थी। तब इसे खारिज कर दिया गया था। 2010 में दूसरी प्रशासनिक सुधार रिपोर्ट में भी इसकी अनुशंसा की गई। 2014 में केंद्र में एनडीए सरकार बनने के बाद 2016 में इसकी संभावना तलाशने के लिए एक कमेटी बनाई गई। इस कमेटी ने इस पर आगे बढ़ने की अनुशंसा की। जुलाई, 2017 में केंद्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने इस संबंध में प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश जारी किया था। तब कहा गया था कि नौकरशाही में लैटरल एंट्री से पेशेवर प्रतिभाओं और मध्यम स्तर के अधिकारियों की कमी को दूर किया जा सकेगा।

यह महत्वपूर्ण है कि निजी क्षेत्र के पेशेवरों को सरकारी क्षेत्र में लेने के इस नए अभियान का उद्देश्य है, विभिन्न असाधारण योग्यता वाले अनुभवी पेशेवरों को उनकी प्रतिभा और क्षमता के हिसाब से प्रशासन व देश के विकास में योगदान देने का मौका सुनिश्चित करना। बड़ी तादाद में विभिन्न क्षेत्रों से सरकार के साथ काम करने के लिए विशेषज्ञों और पेशेवरों के आवेदन आए थे।

मोदी सरकार से पहले भी विभिन्न प्रधानमंत्रियों द्वारा कुछ प्रतिभाओं और पेशेवरों को सरकार के कार्यों में सहयोग के लिए जिम्मेदारी सौंपी जाती रही है। यूपीए सरकार के दूसरे कार्यकाल में नंदन नीलेकणी को लाया गया और उन्हें आधार के लिए अधिकार दिए गए। इंदिरा गांधी भी नियमित रूप से कारोबारी जगत की प्रतिभाओं को बेहतर उपयोग में लाती रहीं। दूरसंचार में क्रांति के लिए राजीव गांधी सैम पित्रोदा को लेकर आए। अटल बिहारी वाजपेयी ने आर.वी. शाही को बिजली सचिव की महत्वपूर्ण भूमिका दी थी। वी.पी. सिंह ने अरुण सिंह को जिम्मेदारी देकर देश के रक्षा संगठन का आधुनिकीकरण करने के कदम उठाए। नरसिंह राव मनमोहन सिंह को लेकर आए और उन्हें सीधे वित्त मंत्री बना दिया। मनमोहन सिंह के वित्त सचिव मोंटेक सिंह आहलूवालिया ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यद्यपि सरकारी तंत्र में निजी क्षेत्र के पेशेवरों और क्षमतावान विशेषज्ञों की संयुक्त सचिव के पद पर नियुक्तियां लाभप्रद दिखाई दे रही हैं, पर इसके सामने कई चुनौतियां भी होंगी। इनमें से प्रमुख चुनौती नियुक्त विशेषज्ञों की गुणवत्ता संबंधी है। पेशेवर विशेषज्ञों को एक खास शैक्षणिक मानक पूरा करना होता है और जिन लोगों को चुना जाता है, उन्हें संघ लोक सेवा आयोग के साक्षात्कार से गुजरना होता है। उनके लिए कोई लिखित परीक्षा नहीं होती है। चूंकि संयुक्त सचिव पदों पर लैटरल एंट्री पहली बार हुई है, अतः अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह बाहरी विशेषज्ञों की नियुक्ति का सर्वश्रेष्ठ तरीका है या नहीं। दूसरी चुनौती यह है कि शुरुआत से ही विभिन्न संयुक्त सचिवों की नियुक्ति विवादों में आ गई है। ऐसे में यह देखना होगा कि सरकार इनकी विशेषज्ञताओं का कितना लाभ ले सकती है।

खुली खिड़की

ह्वाट्सऐप सबसे लोकप्रिय

हाल के वर्षों में स्मार्टफोन के बढ़ते उपयोग के कारण एंड्रायड ऐप उपयोगकर्ताओं की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। लेकिन इन एंड्रायड ऐप में सबसे ज्यादा ह्वाट्सऐप का उपयोग किया जाता है।

आंकड़े - करोड़ में, वर्ष 2018 के

कुछ भी अनुपयोगी नहीं

सत्संग

आयुर्वेद के महान ज्ञाता चरक के आश्रम के पास अनेक प्रकार की वनस्पतियां थीं। वह हर पूर्णिमा की रात अपने शिष्यों को लेकर वन में निकल जाते और वहां उन्हें विविध प्रकार की वनस्पतियों का ज्ञान कराते। रात में हिंस्र पशुओं की भयावह ध्वनि से डरकर कुछ शिष्य भाग जाते। तब चरक कहते, अच्छा हुआ कि कायर भाग गए। जो मृत्यु से डर गया, वह क्या वैद्य बनेगा! वैद्य का तो काम ही मृत्यु से लड़ना है। चरक की परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी, जिसमें कुछ ही छात्र उत्तीर्ण हो पाते थे। एक बार परीक्षा में चरक ने अपने छात्रों को एक महीने तक घूम-घूमकर उन वनस्पतियों को ढूंढकर लाने को कहा, जिनका आयुर्वेद में प्रयोग नहीं होता। कुछ छात्र घास-फूस और कंटीली झाड़ ले आए। कुछ पत्तियां और वृक्षों की छाल ले आए। कुछ ने अधिक परिश्रम कर विषैली फलियां और जड़ें ढूंढ निकालीं। उनतीसवें दिन ज्यादातर छात्रों ने अपनी वनस्पतियां गुरुदेव को दिखा दीं। चरक ने उनमें से कुछ वनस्पतियों से बनने वाली औषधियों के बारे में बताया, तो कुछ के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा। तीसवें दिन एक छात्र खाली हाथ आया और कहने लगा, गुरुदेव, मुझे तो ऐसी एक भी वनस्पति नहीं मिली, जिसका आयुर्वेद में उपयोग न होता हो। इस पर सभी छात्र हंस पड़े। चरक ने कहा, इस बार की परीक्षा में सिर्फ यही एक छात्र उत्तीर्ण हुआ है।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

जंगल, भूरी गाय और शेर

एक चतुर शेर की कहानी, जिसने शिकार करने के लिए भूरी गाय से दोस्ती गांठी।

एक जंगल में तीन गाएं थीं। उसमें से एक काली, एक सफेद और एक भूरी थी। तीनों हमेशा साथ रहती थीं। एक शेर बड़े दिनों से उन पर नजरें जमाए हुए था। पर वह उनमें से किसी एक पर झपट नहीं सकता था, क्योंकि वे अकेली होती ही नहीं थीं। ऐसे में शेर को यह तरकीब सूझी कि क्यों न उनमें से किसी एक गाय से दोस्ती की जाए। एक दिन भूरी गाय के पास जाकर उसने नरम स्वर में कहा, कैसी हो मित्र? भूरी गाय ने सहमते हुए धीरे से पूछा, महाराज, क्या आप मुझे जानते हैं? शेर मुस्कराते हुए बोला, भला क्यों न जानूंगा? तुम हमारे ही परिवार से हो। इसलिए तो तुम्हारा रंग भूरा है। धीरे-धीरे भूरी गाय और शेर के बीच बातचीत बढ़ने लगी। शेर का साथ पाकर भूरी गाय में अहंकार आ गया। काली और सफेद गाय ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि शेर से दोस्ती उसके लिए ठीक नहीं। शिकार बनाने के लिए ही शेर उससे दोस्ती गांठ रहा है। पर भूरी गाय को लगता कि दोनों गाएं उससे जलती हैं, इसी कारण वे शेर से दोस्ती के लिए मना कर रही हैं। भूरी गाय का स्वभाव बदलने लगा। काली और सफेद गाय से उसके झगड़े बढ़ने लगे। एक दिन शेर भूरी गाय से बोला, चलो, तुम्हें जंगल की सैर कराने ले चलता हूं। तुम्हें मैं अपना साम्राज्य दिखाता हूं। भूरी गाय ने सोचा, हर बार की तरह इस बार भी सफेद और काली गाएं मेरा साथ नहीं देंगी। इसलिए वह शेर के साथ अकेले ही जंगल में जाने को तैयार हो गई। बस फिर क्या था। घने जंगल में मौका देखते ही शेर ने भूरी गाय को अपना शिकार बना लिया। अपने अंतिम समय में भूरी गाय यही सोचती रही कि काश, मैंने उन दोनों की सलाह मानी होती, तो मुझे आज यह दिन न देखना पड़ता। शेर के बहकावे में आकर भूल ही गई थी कि मैं कौन हूं।

हमारा अहंकार ही हमारे विनाश का कारण बनता है।